१. प्रकृतिसमुत्कीर्तन, स्थानसमुत्कीर्तन, तीनों दंडक व उत्कृष्ट और जघन्य स्थितियोंकी तालिका

	प्रकृतिसमुत्कीर्तन		बन्धस्थान	प्रथमसम्यक्त्व अभिमुखके बन्धयोग्य है या नहीं	उत्कृष्ट		जघन्य	
	मूलप्रकृति	उ. प्रकृति			स्थिति	आबाधा	स्थिति	आबाधा
१	ज्ञानावरणीय	मतिज्ञानावरणादि ५	मिथ्यादृष्टिसे लेकर सू. सां. संयत तक	हैं	३० कोडाकोडी सागरोपम	३ वर्ष-सहस्र	अन्तर्मुहूर्त	अन्तर्मु.
२	दर्शन वरणीय	१ नि. नि. २ प्र. प्र. ३ स्त्यान.	मिथ्यादृष्टि व सासादन	,,	,,	,,	$\frac{३}{७}$ सा. ×	,,
		४ निद्रा ५ प्रचला	मिथ्यात्वसे अपूर्वकरणके प्र. सप्तम भाग तक	,,	,,	,,	,,	
		६ चक्षुद. ७ अचक्षु. ८ अवधि. ९ केवल.	मिथ्यात्वसे सूक्ष्मसाम्पराय तक	,,	,,	,,	अन्तर्मुहूर्त	,,
३	वेदनीय	१ साता.	मिथ्यात्वसे सयोगी तक	,,	१५ को.	$१\frac{१}{२}$ व. स.	१२ मुहू.	
		२ असाता.	मिथ्यात्वसे प्रमत्त तक	नहीं	३० ,,	३ ,,	$\frac{३}{७}$ सा. ×	,,
४	मोहनीय (अ) दर्शन-मोह.	१ सम्यक्त्व. २ मिथ्यात्व. ३ सम्यग्मि.	× मिथ्यात्व ×	× हैं ×	७० ,,	७ ,,	$\frac{१}{७}$ सा. ×	,,
	(आ) चारित्रमो. (१) कषाय-वेदनीय	अनन्तानुबन्धी क्रोधादि ४	मिथ्यादृष्टि व सासादन	,,	४० ,,	४ ,,	$\frac{४}{७}$ सा. ×	
		अप्रत्याख्याना. क्रोधादि ४	मिथ्यादृष्टिसे असंयत सम्यग्दृष्टितक	,,	,,	,,	,,	,,
		प्रत्याख्यानावरण क्रोधादि ४	मिथ्यादृष्टिसे संयतासंयत तक	,,	,,	,,	,,	,,

× इसे पल्योपमके असंख्यातवें भागसे हीन ग्रहण करना चाहिए।

प्रकृतिसमुत्कीर्तन		बन्धस्थान	प्रथमसम्यक्त्व अभिमुखके बन्धयोग्य है या नहीं	उत्कृष्ट		जघन्य	
मूलप्रकृति	उ. प्रकृति			स्थिति	आबाधा	स्थिति	आबाधा
	संज्वलन क्रोध	मिथ्यादृष्टिसे अनि. क. तक	है	४० को.	४ व. स.	२ मास	अन्तर्मु.
	,, मान	,,	,,	,,	,,	१ मास	,,
	,, माया	,,	,,	,,	,,	१ पक्ष	,,
	,, लोभ	सूक्ष्मसाम्पराय तक	,,	,,	,,	अन्तर्मुहुर्त	,,
(२) नोकषाय वेदनीय	१ स्त्रीवेद	मिथ्यादृष्टि और सासादन	नहीं	१५ को.	१ $\frac{१}{२}$ व.स.	$\frac{२}{७}$ सा. ×	,,
	२ पुरुषवेद	अनिवृत्तिकरण तक	है	१० ,,	१ ,,	८ वर्ष	,,
	३ नपुंसकवेद	मिथ्यादृष्टि	नहीं	२० ,,	२ ,,	$\frac{२}{७}$ सा. ×	,,
	४ हास्य	अपूर्वक. तक		१० ,,	१ ,,	,,	,,
	५ रति	,,	,,	,,	,,	,,	,,
	६ अरति	,,	नहीं	२० को.	२ व. स.	,,	,,
	७ शोक	,,	,,	,,	,,	,,	,,
	८ भय	,,	है	,,	,,	,,	,,
	९ जुगुप्सा	,,	,,	,,	,,	,,	,,
५ आयु	१ नारकायु	मिथ्यादृष्टि	,,	३३ सा.	$\frac{१}{३}$ पू. को	१० व.स.	,,
	२ तिर्यंचायु	मिथ्यादृष्टि और सासादन	,,	३ पल्योपम	,,	क्षुद्रभव	,,
	३ मनुष्यायु	मिश्रको छोड़ असंयत तक		,,	,,	,,	,,
	४ देवायु	अप्रमत्त तक	,,	३३ सा.	,,	१० व.स.	,,
६ नाम (पिंडप्रकृतियां) १ गति	१ नरक	मिथ्यादृष्टि	नहीं	२० को.सा.	२ व. स.	$\frac{२}{७}$ सा. ×	,,
	२ तिर्यंच	मिथ्या. सासा	सातवीं पृथिवीके नारकी बांधते हैं	,,	,,	,,	,,
	३ मनुष्य	असंयत सम्य. तक	देव नारकी बांधते हैं	१५ को.सा.	१ $_{२}$ ६.	,,	,,
	४ देव	अप्रमत्त तक	तिर्यंच मनुष्य बांधते हैं	१० ,,	१ व. स.	,,	,,

× इसे पल्योपमके असंख्यातवें भागसे हीन ग्रहण करना चाहिए।

प्रकृतिसमुत्कीर्तन		बन्धस्थान	प्रथमसम्यक्त्व अभिमुखके बन्धयोग्य है या नहीं	उत्कृष्ट		जघन्य	
मूलप्रकृति	उ. प्रकृति			स्थिति	आबाधा	स्थिति	आबाधा
(२) जाति	१ एकेन्द्रिय	मिथ्यादृष्टि	नहीं	२० को.	२ व. स.	$\frac{२}{७}$ सा. ×	अन्तर्मु.
	२ द्वीन्द्रिय	,,	,,	१८ ,,	$१\frac{४}{५}$,,	,,	,,
	३ त्रीन्द्रिय	,,	,,	,,	,,	,,	,,
	४ चतुरिन्द्रिय	,,	,,	,,	,,	,,	,,
	५ पंचेन्द्रिय	अपूर्वकरण तक	है	२० ,,	२ ,,	,,	,,
	१ औदारिक	असं. सम्य. तक	देव नारकी बांधते हैं	,,	,,	,,	,,
(३) शरीर ५							
(४) शरीर-बंधन ५	२ वैक्रियिक	अपूर्व. तक	तिर्य. मनुष्य	,,	,,	$\frac{२}{७}$ सा. ×	,,
	३ आहारक	अप्रमत्त और अपूर्वकरण	नहीं	अन्तः-कोडाकोडी	अन्तर्मुहूर्त	अन्तः-कोडाकोडी	,,
(५) शरीर-संघात ५	४ तैजस	अपूर्वक. तक	है	२० को.	२ व. स.	$\frac{२}{७}$ सा. ×	,,
(६) शरीर-संस्थान	५ कार्मण	,,	,,	,,	,,	,,	,,
	१ समचतुरस्र	अपूर्वक. तक	है	१० ,,	१ ,,	$\frac{१}{७}$ सा. ×	,,
	२ न्यग्रोध-परिमंडल	मिथ्या. सासा.	नहीं	१२ ,,	$१\frac{१}{५}$,,	,,	,,
	३ स्वाति	,,	,,	१४ ,,	$१\frac{२}{५}$,,	,,	,,
	४ कुब्ज	,,	,,	१६ ,,	$१\frac{३}{५}$,,	,,	,,
	५ वामन	,,	,,	१८ ,,	$१\frac{४}{५}$,,	,,	,,
	६ हुंड	मिथ्यादृष्टि	,,	२० ,,	२ ,,	,,	,,
(७) शरीरांगोपांग	१ औदारिक	असंयत सम्य. तक	देव नारकी बांधते हैं	,,	,,	,,	,,
	२ वैक्रियिक	अपूर्व. तक	तिर्य. मनुष्य बांधते है	,,	,,	,,	,,
	३ आहारक	अप्रमत्त अपूर्वकरण	नहीं	अन्तः-कोडाकोडी	अन्तर्मुहूर्त	अन्तः-कोडाकोडी	,,
(८) शरीर-संहनन	१ वज्रवृषभ-नाराच	असंयत सम्य. तक	देव नारकी बांधते है	१० को.	१ व. स.	$\frac{२}{७}$ सा. ×	,,
	२ वज्रनाराच	मिथ्या. सासा.	,,	१२ ,,	$१\frac{१}{५}$,,	,,	,,
	३ नाराच	,,	,,	१४ ,,	$१\frac{२}{५}$,,	,,	,,
	४ अर्धनाराच	,,	,,	१६ ,,	$१\frac{३}{५}$,,	,,	,,
	५ कीलिक	,,	,,	१८ ,,	$१\frac{४}{५}$,,	,,	,,
	६ असंप्राप्त सेवर्त	मिथ्यादृष्टि	,,	२० ,,	२ ,,	,,	,,

× इसे पल्योपमके असंख्यातवें भागसे हीन ग्रहण करना चाहिए।

प्रकृतिसमुत्कीर्तन		बन्धस्थान	प्रथमसम्यक्त्व अभिमुखके बन्धयोग्य है या नहीं	उत्कृष्ट		जघन्य	
मूलप्रकृति	उ. प्रकृति			स्थिति	आबाधा	स्थिति	आबाधा
(९) वर्ण	५ कृष्णादि	अपूर्व. तक	हैं	२० को.	२ व. स.	$\frac{2}{7}$ सा. ×	अन्तर्मु.
(१०) गंध	१ सुरभि २ दुरभि	,,	,,	,,		,,	,,
(११) रस	५ तिक्तादिक	,,	,,	,,	,,	,,	,,
(१२) स्पर्श	८ कर्कशादि	,,	,,	,,	,,	,,	,,
(१३) आनुपूर्वी	१ नरकगति.	मिथ्यादृष्टि	,,	,,	,,	,,	,,
	२ तिर्यंचगति.	मिथ्या. सासा.	७ वें नरकके जीव बांधते हैं	,,	,,	,,	,,
	३ मनुष्यगति.	असंयत-सम्य. तक	देव नारकी बांधते हैं	१५ को.	$१\frac{1}{2}$ व. स.	,,	,,
	४ देवगति.	अपूर्व. तक	तिर्यंच मनुष्य बांधते हैं	१० ,,	१ ,,	,,	,,
(१४) विहायोगति	१ प्रशस्त	,,	है	,,	,,	,,	,,
	२ अप्रशस्त	मिथ्या. सासा.	नहीं	२० ,,	२ ,,	,,	,,
(अपिंड प्रकृतियां)	१ अगुरुलघु	अपूर्व. तक	है	,,	,,	,,	,,
	२ उपघात	,,	,,	,,	,,	,,	,,
	३ परघात	,,	,,	,,	,,	,,	,,
	४ उच्छ्वास	,,	,,	,,	,,	,,	,,
	५ आतप	मिथ्यादृष्टि	नहीं	,,	,,	,,	,,
	६ उद्योत	मिथ्या. सासा.	७ वें नरकके जीव विकल्पसे बांधते हैं	,,	,,	,,	,,
	७ त्रस	अपूर्व. तक	है	,,	,,	,,	,,
	८ स्थावर	मिथ्यादृष्टि	नहीं	,,	,,	,,	,,
	९ बादर	अपूर्व. तक	है	,,	,,	,,	,,
	१० सूक्ष्म	मिथ्यादृष्टि	नहीं	१८ ,,	$१\frac{4}{5}$,,	,,	,,

× इसे पल्योपमके असंख्यातवें भागसे हीन ग्रहण करना चाहिए।

प्रकृतिसमुत्कीर्तन		बन्धस्थान	प्रथमसम्यक्त्व अभिमुखके बन्धयोग्य है या नहीं	उत्कृष्ट		जघन्य	
मूलप्रकृति	उ. प्रकृति			स्थिति	आबाधा	स्थिति	आबाधा
	११ पर्याप्त	अपूर्वक. तक	है	२० को.	२ व. स.	३/७ सा. ×	अन्तर्मु.
	१२ अपर्याप्त	मिथ्यादृष्टि	नहीं	१८ ,,	१ ४/५ ,,	,,	,,
	१३ प्रत्येक-शरीर	अपूर्वक. तक	है	२० ,,	२ ,,	,,	,,
	१४ साधारण शरीर	मिथ्यादृष्टि	नहीं	१८ ,,	१ ४/५ ,,	,,	,,
	१५ स्थिर	अपूर्वक. तक	है	१० ,,	१ ,,	,,	,,
	१६ अस्थिर	प्रमत्तसं. ,,	नहीं	२० ,,	२ ,,	,,	,,
	१७ शुभ	अपूर्वक. ,,	है	१० ,,	१ ,,	,,	,,
	१८ अशुभ	प्रमत्तसं. ,,	नहीं	२० ,,	२ ,,	,,	,,
	१९ सुभग	अपूर्वक. ,,	है	१० ,,	१ ,,	,,	,,
	२० दुर्भग	मिथ्या. सासा.	नहीं	२० ,,	२ ,,	,,	,,
	२१ सुस्वर	अपूर्वक. तक	है	१० ,,	१ ,,	,,	,,
	२२ दुःस्वर	मिथ्या. सासा.	नहीं	२० ,,	२ ,,	,,	,,
	२३ आदेय	अपूर्वक. तक	है	१० ,,	१ ,,	,,	,,
	२४ अनादेय	मिथ्या. सासा.	नहीं	२० ,,	२ ,,	,,	,,
	२५ यशःकीर्ति	सूक्ष्मसा. तक	है	१० ,,	१ ,,	८ मुहूर्त	,,
	२६ अयशः-कीर्ति	प्रमत्तसं. ,,	नहीं	२० ,,	२ ,,	३/७ सा. ×	,,
	२७ निर्माण	अपूर्वक. ,,	है	,,	,,	,,	,,
	२८ तीर्थंकर	असंयत सम्यग्दृष्टिसे अपूर्वकरण तक	नहीं	अन्तः-कोड़ाकोडी	अन्तर्मुहूर्त	अन्तः-कोडाकोडी	,,
७ गोत्र	१ उच्च	सूक्ष्मसा. तक	है	१० को.	१ व. स.	८ मुहूर्त	,,
	२ नीच	मिथ्या. सासा.	७ वें नरकके जीव बांधते है	२० ,,	२ ,,	३/७ सा. ×	,,
८ अंतराय	५ दानान्तरायादि	सूक्ष्मसा. तक	है	३० ,,	३ ,,	अन्तर्मुहूर्त	,,

× इसे पल्योपमके असंख्यातवें भागसे हीन ग्रहण करना चाहिए।

३. भिन्न भिन्न गतियोंमें सम्यक्त्वोत्पत्तिके कारण
(गत्यागति चूलिका सूत्र १-४३)

गति	जिनबिंबदर्शन	धर्मश्रवण	जातिस्मरण	वेदना	काल
नरक					
प्रथम पृथ्वी	×	,,	,,	,,	पर्याप्त होनेसे अन्तर्मुहूर्त पश्चात्
द्वितीय ,,	×	,,	,,	,,	,,
तृतीय ,,	×	,,	,,	,,	,,
चतुर्थ ,,	×	×	,,	,,	,,
पंचम ,,	×	×	,,	,,	,,
षष्ठ ,,	×	×	,,	,,	,,
सप्तम ,,	×	×	,,	,,	,,
तिर्यंच (पं. सं. ग. प.)	,,	,,	,,	×	दिवसपृथक्त्वके पश्चात्
मनुष्य (ग. प.)	,,	,,	,,	×	आठ वर्षसे ऊपर
प. देव					
भवनवासीसे शतार-सहस्रार	जिनमहिमदर्शन	,,	,,	देवर्द्धिदर्शन	अन्तर्मुहूर्तसे ,,
आनत–अच्युत		,,	,,	×	,,
नव ग्रैवेयक	×	,,	,,	×	,,
ग्रैवेयकोंसे ऊपरके देव नियमसे सम्यक्त्वी ही होते हैं।					

४. गतियोंमें प्रवेश और निर्गमनसम्बन्धी गुणस्थान
(गत्यागति चूलिका सूत्र ४४-७५)

गति	प्रवेशकालीन गुणस्थान	निर्गमनकालीन गुणस्थान		
नरक				
प्रथम पृथ्वीके नारकी	मिथ्यात्व सम्यक्त्व	मिथ्यात्व सम्यक्त्व	सासादन ×	सम्यक्त्व ×
द्वितीयसे छठवीं पृथ्वी तकके नारकी	मिथ्यात्व	मिथ्यात्व	सासादन	सम्यक्त्व
सातवीं पृथ्वीके नारकी	"	"	×	×
तिर्यंच-मनुष्य-देव				
पंचेन्द्रिय तिर्यंच पर्याप्त व अपर्याप्त	" सासादन सम्यक्त्व	" " सम्यक्त्व	सासादन " ×	सम्यक्त्व " ×
पंचेन्द्रिय तिर्यंच योनिमति मनुष्यिनी भवनवासी देव-देवियां व्यंतर " ज्योतिषी " सौधर्म-ईशानवासी देवियां	मिथ्यात्व सासादन	मिथ्यात्व "	सासादन ×	सम्यक्त्व "
मनुष्य पर्याप्त व अपर्याप्त तथा सौधर्मसे नौ ग्रैवेयक तकके देव	मिथ्यात्व सासादन सम्यक्त्व	" " "	सासादन " "	" " "
अनुदिशोंसे सर्वार्थसिद्धि तकके देव	"	"	×	×

५. जीव किस गतिसे किस गतिमें जाता है
(गत्यागति चूलिका सूत्र ७६-२०२)

निर्गमन करनेवाला जीवभेद	प्राप्त करने योग्य गतियां				
	नरक	तिर्यंच	मनुष्य	देव	विशेष
नारकी					
मिथ्यादृष्टि	×	पं.सं.ग.प.संख्या.	ग.प.संख्या.	×	
सासादन	×	"	"	×	
सम्यग्मिथ्यादृष्टि	×	×	×	×	निर्गमन नहीं होता
सम्यग्दृष्टि	×	×	ग.प.संख्या.	×	
सप्तम पृथिवीस्थ मिथ्यादृष्टि	×	पं.सं.ग.प.संख्या.	×	×	सप्तम पृथिवीमें केवल मिथ्यात्वसे ही निर्गमन होता है।
तिर्यंच					
सं. पं. प. संख्या. मिथ्यादृष्टि	सर्व	सर्व	सर्व	भवनवासीसे शतार-सहस्रार तक	
असंज्ञी पं. प.	प्रथम पृथिवी	"	"	भवन. व्यंतर	
१ पं. सं. अप. २ पं. असं. अप. ३ पृथिवी. बा. सू. प. अ. ४ जल. " ५ वन. निगोद " ६ वन. बा. प्र. प. अप ७ द्वी. प. अ. ८ त्री. " ९ चतु. "	×	सर्व संख्या.	सर्व संख्या.	×	
तैज. बा. सू. प. अप. वायु " "	×	"	×	×	
सासादन संख्या.	×	एकइं. (पृथि. जल. वन.प्र.बा.सू.), पं.सं.ग.प.संख्या.	ग.प.संख्या. असंख्या.	भवन से शतार-सहस्रार तक	
सम्यग्मिथ्या. संख्या. असंख्या.	×	×	×	×	निर्गमन नहीं होता

निर्गमन करनेवाला जीवभेद	प्राप्त करने योग्य गतिया नरक	तिर्यंच	मनुष्य	देव	विशेष
सम्यग्दृष्टि संख्या.	×	×	×	सौ. ई. से आरण-अच्युत तक	
मिथ्यादृष्टि असंख्या.	×	×	×	भवन, व्यंतर, ज्योतिषी	
सासादन ,,	×	×	×	,,	
सम्यग्दृष्टि ,,	×	×	×	सौधर्म-ईशान	
मनुष्य					
मनुष्य मिथ्या. संख्या.	सर्व	सर्व	सर्व		
,, प. ,,	,,	,,	,,	भवन. से नौ ग्रैवे. तक	
,, अप.	×	,,	,,	,,	
सासादन ,,	×	एकेन्द्रिय (बा. पृथि., जल., वन.प्र.पर्याप्त) पंचेन्द्रिय सं.ग. प संख्या. असंख्या	ग.प.संख्या. असंख्या.	× भवन. से नौ ग्रैवे. तक	
सम्यग्मिथ्यादृष्टि संख्या. असंख्या.	×	×	×	×	
सम्यग्दृष्टि संख्या.	×	×	×	सौ. ई. से सर्वार्थ-सिद्धि तक	बद्धायुष्कोंकी विवक्षा नहीं की गई
मिथ्या. असंख्या.	×	×	×	भवन, व्यंतर, ज्योतिषी	
सासादन ,,	×	×	×	,,	
सम्यग्दृष्टि ,,	×	×	×	सौधर्म-ईशान	
देव					
भवनत्रिक व सौधर्म-ईशान कल्पवासी मिथ्यादृष्टि	×	एके. (बा.पृ., ज., वन.) सं.ग.प.पं.	ग.प संख्या.	×	
सासादन	×	,,	,,	×	
सम्यग्मिथ्या.	×	×	×	×	
सम्यग्दृष्टि	×	×	ग.प.संख्या.	×	प्रथम पृथिवीके समान
सनत्कु. से शतार-सहस्रार मिथ्या. सासादन	×	पं.सं.ग प.संख्या.	,,	×	
सम्यग्मिथ्या.	×	×	×	×	
सम्यग्दृष्टि	×	×	ग.प.संख्या.	×	
आनतसे नौ ग्रैवेयक मिथ्या सासादन असंयतस.	×	×	,,	×	
सम्यग्मिथ्या.	×	×	×	×	
अनुदिशसे सर्वार्थ. सम्यग्दृष्टि	×	×	म.प.संख्या	×	